नागरिकशास्त्र का इतिहास के साथ सम्बन्ध

नागरिकशास्त्र विषय का अन्य सामाजिक विषयों से बड़ी सरलतापूर्वक सम्बन्ध स्थापित किया जा सकता है। नागरिकशास्त्र सामान्यतया निम्नांकित विषयों के साथ सम्बन्धित किया जा सकता है–

1. नागरिकशास्त्र एवं इतिहास : नागरिकशास्त्र तथा इतिहास में घनिष्ठ सम्बन्ध है। इतिहास मानव-सभ्यता का भण्डार है। इसमें प्राचीन युग का तर्कपूर्ण, गवेषणात्मक तथा क्रमबद्ध अध्ययन किया जाता है। इतिहास प्राचीन काल में हुई घटनाओं का संकलन, व्यवस्था, संगठन तथा विश्लेषण करता है और भूतकाल में किसी समाज द्वारा किए गए उत्थान तथा पतन की परिस्थितियों तथा कारणों का पता लगाता है। इतिहास हमें बतलाता है कि कोई समाज भूतकाल में किन-किन आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक तथा सांस्कृतिक अवस्थाओं से गुजरा है। संक्षेप में, इतिहास समाज के रीति-रिवाजों, परम्पराओं, कला, अच्छाई, बुराई, संस्थाओं तथा उसकी उन्नति-अवनति की कहानी है। इतिहास हमें भूतकाल में की गई त्रुटियों एवं उनके भयंकर परिणामों से अवगत कराके उन त्रुटियों की पुनरावृत्ति न करने के लिए सावधान करता है। इतिहास पारस्परिक कलह, द्वेष, फूट तथा लालच के परिणामों से अवगत कराता है और उनकी पुनरावृत्ति न करने के लिए इशारा करता है। दूसरे शब्दों में, इतिहास सहयोग, सहकारिता तथा सहिष्णुतापूर्ण जीवन व्यतीत करने के लिए कहता है।

नागरिकशास्त्र वर्तमान काल की सामाजिक समस्याओं का अध्ययन करता है। नागरिकशास्त्र समाज के व्यक्तियों को उन अनेक बुराइयों से अवगत कराता है, जिनके कारण भूतकाल में भयंकर युद्ध हो चुके हैं। नागरिकशास्त्र अनेक सामाजिक बुराइयों की उत्पत्ति का पता लगाकर उन्हें दूर करने की चेष्टा करता है। छुआछूत, जातिप्रथा, भाषावाद, प्रान्तीयता, साम्प्रदायिकता आदि समस्याओं के उदय के कारण तथा इन्हें दूर करने के उपाय नागरिकशास्त्र में ही प्राप्त होते हैं। नागरिकशास्त्र भूतकालीन असफलताओं को ध्यान में रखकर भविष्य में उन्नति की योजनाएँ बनाता है। नागरिकशास्त्र अपने सिद्धान्तों का निर्माण इतिहास से प्राप्त अनुभवों के आधार पर निर्मित करता है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि इतिहास नागरिकशास्त्र का निर्माता तथा जन्म देने वाला है तो नगारिकशास्त्र इतिहास का फल है।

नागरिकशास्त्र शिक्षक नागरिकशास्त्र का शिक्षण कराते समय नागरिकशास्त्र का सम्बन्ध अनेक स्थलों पर इतिहास से स्थापित कर सकता है। स्वदेश-सेवा का पाठ पढ़ाते समय नागरिकशास्त्र शिक्षक राणाप्रताप, शिवाजी आदि का वर्णन कर सकता है। सामाजिक कुरीतियों का अध्ययन करते समय स्वामी दयानन्द, महात्मा गाँधी आदि का उल्लेख किया जा सकता है। समाज तथा देश-सेवा का पाठ राजा राममोहन राय, महात्तम गाँधी, गोखले तथा तिलक आदि सम्बन्धित किया जा सकता है। इसी प्रकार अनेक स्थलों पर इन दोनों ही विषयों का सफलतापूर्वक सम्बन्ध स्थापित किया जा सकता है।

Scanned with CamScanner

इतिहास में व्यक्ति समाज और राज्य के भूतकालीन जीवन का तथा नागरिकशास्त्र में नागरिक जीवन का अध्ययन किया जाता है। इन दोनों विषयों का पारस्परिक सम्बन्ध निम्न प्रकार से स्पष्ट किया जाता है—

"इतिहास बिना नागरिकशास्त्र है फलहीन।
नागरिकशास्त्र बिना इतिहास है जड़हीन।"

—प्रो० सीले

History without Civics has not fruit
Civics without History has no root"

—Prof. Seeley

इस प्रकार हम संक्षेप में कह सकते हैं कि इतिहास नागरिकशास्त्र रूपी वृक्ष की जड़ है और नागरिकशास्त्र उसका फल है। अतीत की आधारशिला पर ही वर्तमान का भवन आधारित है। इस प्रकार नागरिकशास्त्र अतीत को वर्तमान से जोड़ने वाली एक कड़ी है। इस विवरण से स्पष्ट हो जाता है कि इतिहास नागरिकशास्त्र का आधार है।

(1) **इतिहास नागरिकशास्त्र का पथ-प्रदर्शक है**—इतिहास अतीत का दर्पण है। इसके अन्तर्गत हम यह अध्ययन करते है कि प्राचीन काल में हमारे देश में कौन-कौन से समाज, समूह एवं समुदाय थे। उनका संगठन कैसा था तथा उनके क्या उद्देश्य थे और उनकी अच्छाइयाँ व दोष क्या थे। उनके मार्ग में कौन कौन सी कठिनाइयाँ आयीं। उन कठिनाइयों को कहाँ तक दूर किया जा सकता है। नागरिकशास्त्र का उद्देश्य मानव जीवन को सुखी एवं आनन्दमय बनाना है। इसका यही उद्देश्य आज है, कल था और कल रहेगा।

(2) **इतिहास नागरिकशास्त्र की प्रयोगशाला है**—इतिहास नागरिकशास्त्र की एक ऐसी प्रयोगशाला है, जहाँ नागरिकशास्त्र के सिद्धान्तों की परीक्षा, प्रयोग और परिमार्जन होता है। इस प्रकार नागरिकशास्त्र व्यक्तियों के प्राचीन काल के अनुभवों का पूरा-पूरा लाभ उठाता है तथा प्राचीन काल में उनके द्वारा की गयी भूलों के प्रति उनको सजग कराके उनकी पुनरावृत्ति को रोकता है।

(3) **दोनों का अध्ययन विषय मानव समाज है**—नागरिकशास्त्र और इतिहास दोनों का ही अध्ययन विषय मानव समाज है। इतिहास मानव के यथार्थ रूप का चित्रण करता है तथा नागरिकशास्त्र उसके जीवन के आदर्श रूप को प्रस्तुत करता है। इस प्रकार दोनों शास्त्रों के अध्ययन का मूल विषय मानव-समाज है।

Scanned with CamScanner